www.a2zpapers.com

Class – M.A.–II

Subject –Hindi

Paper –XX Opt. (i) श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का विशेष अध्ययन

Time Allowed : 3 hrs. **Maximum Marks : 80**

नोट: निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

भाग-एक

खण्ड-एक

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं चार पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) करि साध संगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत॥
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत॥
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति॥
कहै नानक रामु भजि जै जात अउसरु बीति॥

(ख) वेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै॥
पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु फिरावै॥
महि माइआ के भइओ बावरो सूझत नह कुछ गिआना॥
घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना॥

(ग) साच छाडि कै झूठह लागिउ जनमु अकारथ खोइओ॥
करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ॥
राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना॥
उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना॥

www.a2zpapers.com

www.a2zpapers.com

(घ) रीते भरे-भरे सखनावै यह ताको बिवहारे ॥
अपनी माइआ आप पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रुपु धरे बहुरंगी सभ तै रहै निआरा ॥
अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥

(ङ) इकि बिनसै इक असथिरु मानै अरजु लखिओ न जाई ॥ रहाउ ॥
काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥
झूठा तनु साचा करि मानिउ जिउ सुपना रैनाई ॥
जो दीखे सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥

(च) कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥
कउनु गम गुर जा के सिमरै भव सागर कउ तरई ।
कल मै एक नामु करपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै सम नाहिन इह बिधिबेदु बतावै ॥

4×6=24

खण्ड-ब

II. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए:

(क) गुरु तेग बहादुर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालें।

(ख) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में 'माया' की संकल्पना स्पष्ट करें।

(ग) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में गुरुमत दर्शन का दर्शन स्पष्ट करें।

(घ) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में पौराणिक सन्दर्भों का विवेचन करें।

(ङ) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी की राग योजना पर लेख लिखें।

(च) पंजाब के परवर्ती हिन्दी साहित्य पर गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का प्रभाव स्पष्ट करें। 4×6=24

www.a2zpapers.com

www.a2zpapers.com

भाग-दो

III. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो का विस्तृत विवेचन कीजिए:

(क) 'प्रगतिशीलता' को स्पष्ट करते हुए गुरु तेग बहादुर जी की वाणी की प्रगतिशील विचारधारा को स्पष्ट करें।

(ख) गुरु तेग बहादुर वाणी की मूल संवेदना स्पष्ट करें।

(ग) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी की दार्शनिक अवधारणाएं विवेचित करें।

16×2=32

******

www.a2zpapers.com

www.a2zpapers.com